हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।

जाके बल से गिरिवर कांपै।
रोग-दोष जाके निकट न झाँके।

अञ्जनि सन्तन पुत्र महा बलदाई।
सन्तन के प्रभु सदा सहाई।

दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सीय सुधि लाये।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत वार न लाई।

लंका जारि असुर संहारे।
सीता रामजी के काज संवारे।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि संजीवन प्रान उबारे।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

पैठि पाताल तोरि जम कारे।
अहिरावन की भुजा उखारे।

बायें भुजा असुरदल मारे।
दाईं भुजा सब संत उबारे।

सुर नर मुनिजन आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान, उचारें।

कंचन थार कपूर की बाती।
आरति करत अंजना माई।

जो हनुमान जी की आरती गावैं।
बसि बैकुण्ठ अमर पद पावैं।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

लंका विध्वंस किये रघुराई।
तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई।

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य आरतिया पढ़ें

- गणेश जी
- शनि देव
- अम्बे तू है जगदम्बे
- ओम जय जगदीश हरे
- साईं बाबा
- बालाजी
- बाबा रामदेव जी
- जय शिव ओंकारा
- महालक्ष्मी जी
- रविदास जी
- महावीर भगवान
- शारदा माता
- भैरव आरती
- राधा जी
- पितर
- पार्वती जी
- आरती कुंजबिहारी
- अन्नपूर्णा माता

- तुलसी माता
- गंगा मैया
- सूर्य भगवान
- नर्मदा जी
- कृष्ण आरती
- विश्वकर्मा जी
- शीतला माता
- जाहरवीर बाबा
- गुरु गोरखनाथ
- लड्डू गोपाल
- ब्रह्मा जी
- शाकंभरी माता
- प्रेतराज सरकार
- परशुराम जी
- बटुक भैरव
- श्री विंध्येश्वरी
- बाबा गंगाराम जी
- बगलामुखी आरती
- आरती ललिता जी की
- रघुवर लला

- बद्रीनाथ
- गीता जी
- सरस्वती माता
- श्री रामायण जी
- गौ माता

हिन्दीपथ.कॉम